सेनापति ने बीस व्यक्तियों को घर में छिपा लिया था

हालूजी हाड़ा द्वारा वंश रक्षा एवं मेवाड़ में भेजना- दशपुर में जिस समय युद्ध हुआ उस समय हालूजी हाड़ा यहां के सेनापति थे तथा दशोरा जाति की रक्षा का भार इन्हीं पर था। इनके वंशजों को इसके एवज में अस्सी हजार की जागीर भी दी गई थी।

पहले जिस हालूजी हाड़ा का वर्णन आया है वह संभवतः इन्हीं के वंशज थे जिनको यह जागीर दी गई थी। युद्ध के समय हालूजी हाड़ा बड़ी वीरता से लड़े तथा इस कत्लेआम के समय इन्होंने दशोरा ब्राह्मणों के वंश को समूल नष्ट होने से बचाने के लिए इस वंश के बीस व्यक्तियों को अपने घर में घास की गंजी में छिपाकर बचा लिया तथा यह विचार किया कि चित्तौड़ में हिन्दवा सूर्य का राज्य है। मैं इन्हें पत्र लिखकर उनकी शरण में भेज दूं तो वे इनकी रक्षा करेंगे। ऐसा सोचकर हालूजी ने मेवाड़ के राणा को एक पत्र लिखा, 'यह दशपुर राज्य यवनों का हो गया है, सारे ब्राह्मण एक साथ मारे जा चुके हैं। अब यवन दशपुर के स्वामी हो गये हैं। अब इन बचे हुए प्राणों की आप रक्षा करें।' ऐसा लिखकर आगे उसने दशपुर का इतिहास लिखते हुए लिखा कि, 'इन ब्राह्मणों के 12 गोत्र हैं तथा जो बचे हुए स्त्री पुरुष हैं वे भिन्न-भिन्न गोत्रों के हैं।' यह लिखकर उसने इनके बारह गोत्र इनकी बारह देवी के नाम अवंटक, प्रवर, गण, वेद, शाखा, यक्ष आदि का वर्णन लिख भेजा तथा यह भी लिखा कि, 'दस बालक काशी पढ़ने गये हैं। भगवान शिव उनकी रक्षा करें। यहां से जो आ रहे हैं उनमें दस लड़कियां कुंआरी हैं, तथा पांच पुरुष शादीशुदा हैं जिनकी पत्नियां साथ हैं। इस प्रकार इन बीस व्यक्तियों को आपकी शरण में भेज रहा हूं।' एक विवरण में यह भी मिलता है कि हालूजी हाड़ा ने पांच जोड़ों और तीन कुंआरी कन्याओं को बचाया था तथा सात दशोरा कन्याएं शिवना नदी में स्नान को गई थीं उन्हें एक धोबी ने कपड़े धोते हुए कपड़ों की आड़ में इधर-उधर छिपा दिया था। हालूजी हाड़ा ने इन बीसों को अपने पहाड़ी ग्राम में ले जाकर गुप्त रूप से रख दिया। इसी बीच हाड़ा राय ने गुप्त रूप से काशी समाचार भेजकर विद्याध्यन कर रहे दस व्यक्तियों को भी बुला लिया तथा आक्रमण का समाचार भी भेज दिया। जब ये व्यक्ति दशपुर पहुंचे तो इनका विवाह इन दसों कन्याओं के साथ कर दिया। यह विवाह माघ शुक्ल पंचमी, बसन्त पंचमी के दिन यवनों के भय के कारण एक गेहूं के खेत में सम्पन्न कराया गया। अपने परिवार के मृतकों को पिंडदान देने के बाद यह विवाह सम्पन्न कराया। इस समय कुल तीस व्यक्ति थे। इन विद्वानों के बारे में हाड़ाराय ने फिर चित्तौड़ के राणा को लिखा कि, ये सब मेरे प्राणों से भी प्यारे हैं। इनकी हर प्रकार से रक्षा करना। इनको प्राणदान देना, ऐसी मेरी प्रार्थना है। ये सब ब्राह्मण सब गुणों की खान हैं। ये रखने योग्य हैं। ये राजा के घर की शोभा बढ़ाने वाले हैं। ये चारों वेद और छः शाखाओं के जानने वाले हैं। ये छः दर्शन और अठारह ही पुराणों के ज्ञाता हैं। आदि। इन्होंने भी दशपुर से रवाना होते समय दशपुर न जाने एवं शिवना नदी का जल न पीने की प्रतिज्ञा ली। इस प्रकार इस जाति का मन्दसौर से हमेशा के लिए सम्बंध विच्छेद हो गया। मेवाड़ के महाराजा ने जिन दशोरा ब्राह्मणों को शरण दी वे मेवाड़ में ही बस गये। आज भी यह छोटी सी जाति यहां विद्यमान है जिनके कुल मिलाकर इस समय 272 परिवार हैं जिनकी जनसंख्या केवल 1608 है। ❖ **संकलन-श्रीमती शीला दशोरा**

रंग बदलता दुख

लघु कथा

हरिया अपने दोस्त के लड़के की शादी में गया था. और पास के गांव से वापस लौट रहा था। वह बहुत खुश था। शादी बहुत धूम-धाम से हुई थी और उसने खूब छककर आनन्द लिया था। उसका गांव सड़क किनारे था। ग्वाले गांव की गाय, भैंस, बकरियां अधिकतर इसी सड़क के आसपास चराते रहते थे। बस से उतरकर हरिया यह देख कर सन्न रह गया कि उसकी भैंस किसी वाहन से टकरा कर गिरी पड़ी थी। उसकी आंखों में आंसू आ गए। भाव विह्वल होकर वह दौड़ता हुआ भैंस के पास पहुंचा। कभी भैंस के कान सहलाता फिर सींग। फिर इतने बड़े नुकसान को सह न पाने के कारण दुःखी होकर भैंस का मुंह अपने हाथों में ले लिया और फूट-फूट कर रोने लगा। तभी उसका बड़ा बेटा उसके पास आया और बोला-बापू रो मत। इस भैंस को तो मैंने परसो बेच दिया है। हरिया के चेहरे के भाव तत्काल बदल गए। वह भैंस को छोड़कर तत्काल उठ खड़ा हुआ। धोती के पल्ले से अपने गालों पर लुढ़क आए आसुओं को पोंछा और फिर से हर्षित होकर शादी में हुई मौजमस्ती के किस्से अपने बेटे को सुनाता हुआ घर की तरफ चल दिया।

आशा नागर
सी-12/9, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2521157